पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस

रविवार 13 मई 2012

सायं 3:30 से 7:15 बजे तक

स्थान: हिन्दी भवन, आई. टी. ओ.

नई दिल्ली-110002

आप सपरिवार सादर आमंत्रित है

दर्शन अग्निहोत्री — अध्यक्ष

डॉ. अनिल आर्य — संयोजक

अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट

वर्ष-28 अंक-22 वैशाख-2069 दयानन्दाब्द 189 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2012 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व भारतीय संस्कृति विकास परिषद् ने मनाया श्री राम जन्मोत्सव

भगवान राम के चित्र की नहीं, अपितु चरित्र की पूजा करें - डा. अनिल आर्य का आह्वान

मंच संचालन करते श्री जीवन प्रकाश शास्त्री, साथ में दीपक वेदश्रवा, चन्द्रदेव शास्त्री, जगवीर सिंह आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, वेद पाल आर्य, रमेश योगाचार्य व महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र में समारोह अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य भारतीय संस्कृति विकास परिषद् द्वारका के कार्यकत्ताओं को सम्मानित करते हुए।

नई दिल्ली। रविवार, 1 अप्रैल 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् व भारतीय संस्कृति विकास परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जन्मोत्सव डी.डी.ए. पार्क, पॉकेट-13, द्वारका, फेज-1 में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के अध्यक्ष डॉ अनिल आर्य ने कहा कि आज नयी पीढ़ी को भगवान राम के आदर्श चरित्र से अवगत करवाने की आवश्यकता है। हमें भगवान राम के जीवन चरित्र को जीवन में अपनाना चाहिए, केवल चित्र की पूजा करने से कुछ प्राप्त नहीं होगा।

कार्यक्रम का शुआरम्भ 11 कुण्डीय यज्ञ के साथ हुआ, परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व कुशलता पूर्वक सम्भाला तथा कहा कि यज्ञ यानि की परोपकार की भावना को जीवन में आत्मसात करने का आह्वान किया। समारोह का संचालन आचार्य जीवन प्रकाश शास्त्री ने किया। आचार्य सन्दीप रूप (बदांयु) व सुषमा (रोहिणी) के भजन हुए। श्री जगवीर सिंह आर्य, प. राजवीर शास्त्री आदि ने भी अपने विचार रखें। समारोह को सफल बनाने में अशोक टीगल, डॉ. मुकेश सुधीर, चन्द्र देव शास्त्री, शिशुपाल आर्य, प्रेमकांत बत्रा, पंकज सोनू का विशेष योगदान रहा।

आर्य समाज, गांधी नगर, गाजियाबाद व आर्य समाज सूर्य निकेतन में उत्सव

नई दिल्ली। रविवार, 8 अप्रैल 2012, आर्य समाज, गांधी नगर, गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर आर्य नेता श्री माया प्रकाश त्यागी, डॉ. अनिल आर्य, डॉ जयेन्द्र आचार्य, डा. वीरपाल विद्यालंकार प. कुलदीप आर्य भजनोपदेशक के उद्वोधन हुए।

उपरोक्त चित्र में समारोह अध्यक्ष श्री श्रद्धानंद शर्मा को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, मंत्री श्री वेद व्यास जी, स्वामी सत्यवेश व परिषद् के प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य।

द्वितीय चित्र में रविवार 8 अप्रैल 2012 को आर्य समाज, सूर्य निकेतन, दिल्ली में पूर्वी दिल्ली की आर्य कार्यकर्त्ता बैठक सौल्लास सम्पन्न हुई। हिन्दू महासभा के श्री जंगबहादुर क्षत्रिय को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, डा. वीर पाल विद्यालंकार, यशोवीर आर्य, दिनेश आर्य, श्यामदास सेतिया, संजय आर्य, सुरेश आर्य, यज्ञवीर चौहान, शिशुपाल आर्य व कृष्ण पाल सिंह जी प्रधान शिक्षक। बैठक का कुशल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री श्री महेन्द्र भाई ने किया। विभिन्न आर्य प्रतिनिधियों ने शिविरों के रचनात्मक कार्यक्रम को तन-मन-धन से सफल बनाने का आश्वासन दिया।

शिक्षाविद् डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 9 जून 2012 से रविवार 17 जून 2012 तक

स्थान: ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल पुष्प विहार (साकेत), सैक्टर-7, नई दिल्ली-110072

नयी युवा पीढ़ी को ईश्वर भक्त, देशभक्त, संस्कारवान एवं चरित्रवान बनाने के लिए अवश्य भेजें

सम्पर्क करें-

श्री महेन्द्र भाई- 9013137070, श्री संतोष शास्त्री-9868754140

श्री रामकुमार सिंह-9868064422, श्री प्रकाशवीर शास्त्री-9811757437

आयोजक: **केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली (पंजीकृत)**

कश्मीरी हिन्दुओं के निष्कासन के बाद घाटी में उनकी सांस्कृतिक धरोहर को नष्ट करने का प्रयास - प्रो. चमनलाल सप्रू

वर्ष 1990 के जनवरी मास की 10-20 तारीख की मध्य रात्रि को सभी मस्जिदों के ध्वनि प्रसारकों से आवाजें आई-'हिन्दूभारत से आजादी हासिल करने के लिए जिहाद में शामिल हो जाओ। ऐ मोमिनो। अगर तुम्हारे पास दो लड़के हैं तो एक को जिहादी तंजीम में शामिल कराओ। आजादी का मतलब क्या-

ला इलाह इलल्लह।।

हिन्दुओं कश्मीरी पंडितों को संबोधित होकर उद्घोषणाएं हुई-'रॅलिव,गॅलिव, चॅलिव' अर्थात या तो मिलो (हमारे जिहाद के साथ)? मिट जाओ (नहीं तो मर जाओ) भागो जाओ (नहीं तो यहाँ से निकल जाओ) दैनिक 'अलसफा' की प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित सुर्खी इस प्रकार छपी-'कश्मीरी पंडितों दस दिन के अंदर वादी (कश्मीर घाटी)। चुन-चुन कर कश्मीरी हिन्दुओं का निर्ममता से कत्ल करना शुरू हुआ। लगभग 1200 की सूची उपलब्ध है और पलायन प्रारंभ हुआ।

अभिप्राय यह कि कश्मीर घाटी को हिन्दू विहीन करने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। इस प्रकार लगभग चार लाख कश्मीरी भाषी हिन्दू अपना जन्म स्थान छोड़ने पर विवश हुए।

इसी बात से मुजाहिदीन संतुष्ट नहीं हुए बल्कि पचास हजार साल पुरानी हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के चिह्न मिटाने की भी प्रक्रिया प्रारंभ हुई। सुप्रसिद्ध उपनगर एवं जिले अनन्तनाग का नाम इस्लामाबाद लिखना शुरू किया। श्रीनगर के मध्य आदि शंकराचार्य की साधना स्थली शंकराचार्य पहाड़ी नाम से पर्वत का नाम तख्ते सुलेमान लिखा जाने लगा। इसी प्रकार श्री शारिका चक्रेश्वरी का प्राचीन मंदिर जिस पहाड़ी पर अवस्थित है उसे कोहे मारान लिखा जाने लगा। तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन द्वारा केन्द्रीय आर्थिक सहयोग से जो श्री नगर शहर से हवाई अड्डा तक राजमार्ग का निर्माण कर इन्दिरा गांधी रोड रखा गया, उस मार्ग पर सभी नाम पटों पर कालिख पोतकर एक प्रमुख आतंकवादी मुजाहिद (सुरक्षा बलों द्वारा मारे गए) का नाम लिखा गया।

1990 में प्रारंभ किए गए आतंकवादी अभियान में हिन्दुओं के पलायन पर खाली पड़े मकानों के सामान लूट कर जलाए जाने अथवा अनधिकृत कब्जे जमाने के बाद प्रमुख देवस्थलों यथा क्षीरभवानी, चक्रेश्वरी शारिका देवी मंदिर, शंकराचार्य मंदिर (जिन्हें सुरक्षा बलों का संरक्षण है) छोड़कर गली, गली मोहल्ले मोहल्ले के सैंकड़ों छोटे-बड़े मंदिरों की दुर्लभ मूर्तियां तोड़ी गई और धर्मशालाओं को क्षतिग्रस्त किया। मेरे पास भग्न मूर्तियों और क्षतिग्रस्त अनेक देवस्थलों के नवीनतम हृदय विदारक चित्र हैं। अपने ही घर की बात बताऊं। मेरे टूटे फूटे मकान के चित्र (जो मेरे एक परिचित सिख लड़के ने लाये हैं) में एक हृदय विदारक चित्र को देखकर मेरी बेटी फफक-फफक कर रो पड़ी। उस चित्र में आप हमारे पूजा घर से लकड़ी के छोटे मंदिर को उठाकर शौचालय में कमोड के ऊपर रखा गया। मैंने बताया बेटी यह मुजाहिदों द्वारा हमारे आस्था प्रतीकों को अपमानित करने का प्रमाण है।

सुधी पाठक वृन्द जरा विचार कीजिए हमने अपने प्रक्षेपण अस्त्रों के नाम अग्नि, नाग आदि रखे हैं किन्तु पाकिस्तान ने गोरी और गजनी रखे हैं। इसका अभिप्राय है कि भारत पर आक्रमण करने वाले मुहम्मद गजनी और मुहम्मद गोरी ने जिस अभियान द्वारा भारत को इस्लामी देश बनाने का काम प्रारंभ किया उसे सैन्य शक्ति द्वारा पाकिस्तान जिहाद कह कर पूरा करने का स्वप्न देख रहा है। उनका नारा है हँस के लिया पाकिस्तान अब लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान। वर्तमान राज्यपाल के पूर्ववर्ती ले. ज. (सेवानि.) एस. के. सिन्हा ने माता वैष्णवी देवी श्राईन बोर्ड के आर्थिक सहयोग से कश्मीर मंडल में शारदा पीठ विश्वविद्याालय की स्थापना का निर्णय लिया किन्तु एतदर्थ जमीन खरीदने का विरोध किया गया और शारदा पीठ विश्वविद्यालय बनाने का विरोध किया गया। स्मरण रहे कि कश्मीर मंडल में इस्लामिक यूनिवर्सिटी तथा राजौरी में गुलाम बादशाह यूनिवर्सिटी पिछले बीस वर्षो में ही अस्तित्व में आई। इनको यू.जी.सी. के द्वारा करोड़ो रूपये का अनुदान भी दिया जाता है।

कश्मीर में हिन्दूओं के पलायन के बाद हजारों वर्षो की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने के लिए निम्नलिखित उपाय तुरन्त करने की अतीव आवश्यकता है।

(क) विस्थापित कश्मीरी हिन्दू समाज के घाटी में पुनर्वास की प्रक्रिया को युद्ध स्तर पर प्रारंभ किया जाए।

(ख) श्री अमरनाथ जी की यात्रा के साथ-साथ सभी प्रमुख तीर्थ स्थलों की यात्रा हेतु ग्रुपों में भेजने का सिलसिला प्रारंभ होना चाहिए। ऐसे धार्मिक स्थलों यथा क्षीर भवानी, हरि पर्वत, शंकराचार्य, ज्वाला देवी, भद्रकाली, कपाल मोचन, वितस्ता (झेलम) उद्गम स्थल व्यथॅ वॉतुर (विरास्ता उत्तरी) और उसके साथ सटे वेरी नाग, मार्तण्ड मट्टन ग्राम का सूर्य मंदिर, ज्येष्ठेश्वी, विवेकानन्द आश्रम नागडंडी, नागबल (अनन्तनाग) गणेश मंदिर (श्रीनगर) विजयेश्वर नारान नाग अवन्तेश्वर, संगम (प्रयाग) आदि-आदि। पर निरन्तर भारत के कोने-कोने से आने वाले यात्रियों के आगमन से इनका अस्तित्व बचा रहेगा।

(ग) उपर्युक्त धार्मिक स्थानों की संलग्न सम्पत्ति को अनधिकृत कब्जे से मुक्त कराने, उनके रख-रखाव तथा पुनर्निर्माण हेतु गुरूद्वारा प्रबन्धक समिति की भाँति कश्मीर घाटी स्थित (छोटे बड़े सभी) धार्मिक स्थलों के प्रबन्धन हेतु एक सर्वशक्ति सम्पन्न प्रबन्ध समिति का गठन किया जाए। इस प्रबन्ध समिति में चारों धामों के शंकराचार्य, विश्व हिन्दू परिषद अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य समाजों की प्रबन्ध समिति के प्रतिनिधि, सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष, तिरूपति देवस्थानम् के प्रतिनिधि आदि भी सम्मिलित हों।

(घ) कश्मीर में रचित संस्कृत पाण्डुलिपियों तथा अन्य दुर्लभ ग्रंथों के पुनर्मुद्रण की व्यवस्था होनी चाहिए।

(ड़) यथोचित स्थान पर स्थायी रूप से कश्मीर की सांस्कृतिक परंपरा पर आधारित अर्थात् कश्मीर के संस्थापक कश्यप ऋषि से लेकर आज तक एक प्रदर्शनी एवं संग्रहालय की स्थापना की जाए। इसके द्वारा विस्थापित कशमीरी हिन्दू समाज की नई पीढ़ी को अपनी महान् सांस्कृतिक परंपरा की जानकारी प्राप्त होगी।

(च) पाक अधिकृत कश्मीर में कृष्ण गंगा नदी (जिसे अब दरियाये नीलम कहा जाता है) के किनारे प्रसिद्ध शारदा मंदिर (शारदा पीठ) की यात्रा प्रारंभ होनी चाहिए। जो भारत विभाजन से आज तक बंद है।

-13 बी, ई-3, शताब्दी विहार, सैक्टर 52, नोएडा-201307

जनमानस के हृदय में बसते हैं राम - डॉ. सत्यपाल सिंह

भारत के ही नहीं बल्कि विश्व इतिहास में हजारों वर्षो से जिन महापुरूषों के चरित्र ने जनमानस को हृदय की गहराइयों तक प्रभावित किया है, उनमें भगवान राम का नाम सर्वप्रमुख है। उनका युग चक्रवती सम्राटों व साम्राज्यों का था। यह वह जमाना था जिसके बारे में बाइबल में लिखा है कि सारे संसार में एक ही भाषा व वाणी थी। उस समय हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि धर्म/मत/सम्प्रदाय नहीं थे और न ही आज के समान जाति-आधारित सामाजिक दीवारें। तब मनुष्य समाज के दो ही भाग थे आर्य व अनार्य। जो चरित्रवान व विद्वान न था वही अनार्य (राक्षस) था। तब सारी मानव जाति की एक ही संस्कृति थी। साहित्य शोध भगवान राम के बारे में अधिकारिक रूप से जानने का मूल स्त्रोत महर्षि वाल्मीकि दुनिया के आदि कवि माने जाते हैं। श्रीराम कथा केवल वाल्मीकि रामायण तक सीमित न रही बल्कि मुनि व्यास रचित महाभारत में भी चार स्थलों रामोपाख्यान, आरण्यकपर्व, द्रोण पर्व तथा शान्तिपर्व-पर वर्णित है। बौद्ध परम्परा में श्रीराम सम्बन्धित दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक नामक तीन जातक कथाएं उपलब्ध हैं।

रामायण से थोड़ा भिन्न होते हुए भी वे इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ हैं। जैन साहित्य में राम कथा सम्बन्धी कई ग्रन्थ लिखे गए, जिनमें मुख्य हैं-विमलसूरिकृत पदमचरित्र (अपभ्रंश), रामचन्द्र चरित्र पुराण तथा गुणभद्रकृत उत्तर पुराण (संस्कृत)। जैन परम्परा के अनुसार राम का मूल नाम पदम था।

दूसरे, अनेक भारतीय भाषाओं में भी राम कथा लिखी गई। हिन्दी में कम से कम 11, मराठी में 8, बंगला में 25, तमिल में 12, तेलुगु में 5 तथा उड़िया में 6 रामायणें मिलती हैं। हिन्दी में लिखित गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरित मानस ने उत्तर भारत में विशेष स्थान पाया। इसके अतिरिक्त भी संस्कृत, गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं में राम कथा लिखी गई। महाकवि कालिदास, भास, भट्ट, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमेश, मैथिलीशरण गुप्त, केशवदास, गुरू गोविन्दसिंह, समर्थ गुरू रामदास, सन्त तुकडोजी महाराज आदि चार सौ से अधिक कवियों ने, सन्तों ने अलग-अलग भाषाओं में राम तथा रामायण के दूसरे पात्रों के बारे में काव्यों/कविताओं की रचना की है। विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुर्किस्तानकी खोतानी रामायण, इंडोनेशिया की ककबिन रामायण, जावाका राकेर्ति (रामकीर्ति), खमैर रामायण, बर्मा (म्यांम्मार) की यूतोकी रामयागन, थाईलैंड की रामकियेन आदि रामचरित्र का बखूबी बखान करती हैं। इसके अलावा विद्वानों का ऐसा भी मानना है कि ग्रीस के कवि होमरका प्राचीन काव्य इलियड रोम के कवि नोनसकी कृति डायोनीशिया तथा रामायण की कथा में अद्भुत समानता है। विश्व साहित्य में उतने विशाल एवं विस्तृत रूप से विभिन्न देशों में विभिन्न कवियों/लेखकों द्वारा राम के अलावा किसी और चरित्र का इतनी श्रद्धा से वर्णन नहीं किया गया।

मन्दिर व मृण्मूर्तियाँ-देश-विदेशों में भगवान राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान आदि के सैकड़ों नहीं, हजारों मन्दिरों का निर्माण किया गया। कम्बोडिया के विश्व प्रसिद्ध 11वीं शताब्दी में निर्मित अंकोरवाट मन्दिर की दीवारों पर रामायण व महाभारत के दृश्य अंकित हैं। इसी तरह 9वीं सदी में निर्मित जावा के परमबनन (परमब्रह्म) नामक विशाल शिव मन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है। रामायण से सम्बन्धित सैकड़ों मृण्मूर्तियाँ (टैराकोटा) हरियाणा प्रदेश के सिरसा, हाठ, नचारखेड़ा (हिसार), जींद, संथाय (यमुनानगर), उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी (इलाहाबाद), अहिच्छत्र (बरेली), कटिंघर (एटा) तथा राजस्थान के भादरा (श्रीगंगानगर) आदि जगहों से प्राप्त हुई है।

इन मृण्मूर्तियों पर वनवास काल की प्रमुख घटनाओं को बहुत सुन्दर रूप से दिखाया गया है। इनमें मुख्य है राम,सीता,लक्ष्मण पंचवटी गमन, मारीचमृग, त्रिशिराराक्षस द्वारा खर-दूषण से विचार-विमर्श और राम द्वारा 14 राक्षसों के वध का वर्णन, रावण द्वारा सीताहरण, सुग्रीव-बाल युद्ध, श्रीराम द्वारा बालीवध, हनुमान द्वारा अशोक वाटिका को नष्ट किया जाना, त्रिशिराराक्षस का वध, रावण पुत्र इन्द्रजीत का युद्ध में जाना आदि-आदि दृश्य विद्यमान हैं। इन मृण्मूर्तियों पर गुप्तकाल पूर्व की लिपि में वाल्मीकीय रामायण के श्लोक भी लिखे गये हैं। ये मृण्मूर्ति झज्जर (हरियाणा) के पुरातत्व संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। इनके अलावा सैकड़ो मृण्मूर्तियाँ भारत के विभिन्न संग्रहालयों तथा लंदन म्यूजियम में संग्रहित हैं। इतने लम्बे काल के बाद किसी भी भवन, मूर्ति, मुद्रा, हथियार आदि का अस्तित्व रह ही नहीं सकता। प्रत्येक मनुष्य के अस्तित्व के लिए प्रमाण दिए भी नहीं जा सकते। 4-5 पीढ़ियों पूर्व अगर कोई व्यक्ति बिना सन्तान के

शेष पृष्ठ ३ पर

आज देश की मांग यही है

- खुशहाल चन्द्र आर्य, कोलकत्ता

आज भारत की स्थिति अति नाजुक व खराब हो चुकी है। वह गुलामी की कगार पर पहुँच चुका है। यदि इसी प्रकार से सब पार्टियां अलग-अलग बनी रही और तुष्टीकरण ही होड़ इसी भांति रही तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत पुन: गुलामी की जंजीरों में जकड़ा जायेगा। तब देश की आजादी के लिए होम होनेवाले अमर शहीदों की आत्माऐं हमें कोसेगी और कहेगी क्या हमने अपने जीवन का बलिदान देकर आजादी यह समझकर ली थी कि आप इसे सम्भाल भी नहीं सकेगें। हमें तो अपनी आने वाली संतति पर पूर्ण विश्वास ही नहीं बल्कि गर्व था कि हमारी आनेवाली संतान भी हमारी तरह ही देशभक्त होगी और बलिदानों से ली गई आजादी को पूर्ण सुरक्षित रखते हुए देशवासियों को पूर्ण सुख शान्ति प्रदान करेगी। हमें यदि यह पता होता कि हमारी आनेवाली संतान इतनी बुजदिल, मूर्ख, स्वार्थी व पदलोलुप होगी जो अपने स्वार्थ के लिये अपनी नेतागिरी चमकाने के लिये और अपने पद को बरकरार रखने के लिए मेरे प्यारे देश भारत को देश द्रोहियों के हाथ सुपुर्द कर देगी और इस देश में मानव-मात्र का रक्षक ''गोमाता'' की सरे आम हत्या होगी, संविधान का उल्लघंन होगा, आतंकवादी निर्भय होकर देश को विध्वंस करेगें और राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र गान का अपमान होगा। उनको यह भी नहीं पता होगा कि कौन हमारे शत्रु है और कौन हमारे मित्र है? स्वार्थ के चश्मे से उनको शत्रु भी मित्र दिखाई देगा तो हम अपने प्राणों को क्यों गंवाते? खैर! अब भी समय है यदि हम सभी राष्ट्रवादी भारतीय सचेत हो जाये और अपने स्वार्थ और पद लोलुपता को त्याग कर सब एक जूट होकर इस मूल्यवान आजादी की रक्षा करना चाहे तो अब भी रक्षा कर सकते है उसके निम्नलिखित उपाय है।

सबसे पहले हमें यह भ्रम निकालना होगा कि जो आजादी हमें अनेकों बलिदानों से मिली है। वह हमें बिना बलिदानों के सिर्फ गांधी जी की अहिंसा की नीति से मिली है। जो वस्तु बिना मूल्य यानि मुफ्त में मिलती है वह वस्तु सावधानी से नहीं रखी जाती। उसका लापरवाही से प्रयोग किया जाता है और उसके प्रति किसी का प्रेम नहीं होता। जिस वस्तु को हम अपने खून-पसीना की गाढ़ी कमाई देकर खरीदतें है तो उसमें हमारा मोह व प्रेम होता है। उसके प्रति लापरवाही नहीं-बरती जाती बल्कि उसकी पूरी सावधानी रखते हुए रक्षा की जाती है। इसलिए हमें प्रथम तो यह भ्रम निकालना बहुत जरूरी है कि आजादी हमें बातों-बातों में ही मिल गई। इसके लिए हमारे हजारों नौजवान, देशभक्त क्रांतिकारियों जैसे भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, सुभाष बाबु, वीर सावरकर, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द व भाई परमानन्द आदि आदि, जिन्होंने अपने जीवन की आहूति देकर इसे प्राप्त की है। अब हमें इसकी हर हाल में रक्षा करनी है, चाहे हमें कितना भी त्याग क्यों न करना पड़े। इसकी रक्षा के लिये हमें अपने स्वार्थ और पदलोलुपता का त्याग करना होगा और एक देशभक्त की भाँति हमें देशद्रोहियों से संघर्ष करना होगा और आजादी माता की रक्षा करनी होगी।

रक्षा करने का मुझे एक ही उपाय समझ में आता है। वह यह है कि राष्ट्रवादी भारतीय प्रत्येक संस्था में है और मुसलमान भाई भी काफी संख्या में राष्ट्रवादी है। यदि यह सभी एक हो जाये तो कोई कारण नहीं कि देश की बागडोर अच्छे देशभक्त नि:स्वार्थी जनहितकारी व्यक्तियों के हाथ में न आवें। हिन्दू, मुस्लिम एकता समानता के आधार पर राष्ट्र के हित चाहने वाले हिन्दू, मुस्लिम दोनों को साथ लेकर चलने वाली हो। तुष्टीकरण और आरक्षण की नीति से देश को तो नुकसान हुआ ही है साथ ही हमारे मुसलमान भाईयों व हरिजन भाईयों को भी कम नुकसान नहीं हुआ। उन्होंने समझा की जायज व नजायज सभी कामों में कांग्रेस की सरकार हमारे साथ है ही हमारे किसी काम में कोई बाधा नहीं आती इसलिये उन्होंने अपनी उन्नति और विकास पर ध्यान कम दिया। जब थर्ड डिविजन पास को भी वहीं नौकरी मिलती है जो फर्स्ट डिविजन वाले को मिलती है तो फिर फर्स्ट डिविजन पास को भी उन्होंने अपनी उन्नति और विकास पर ध्यान कम दिया। तब तो फिर फर्स्ट डिविजन लाने की कोशिश कौन करेगा? इसीलिये उनका जीवन स्तर ऊंचा कम हुआ। यदि आरक्षण इतना लम्बा न रखते तो मुस्लिम व हरिजन भाई आज बहुत आगे निकल जाते। धर्म निरपेक्षता के नाम से मिली मुस्लिम भाईयों को विशेष रियायतों से हिन्दुओं को दु:ख पहुंचा और मुसलमानों को झूठा अभिमान हो गया कि हमारा कौन क्या बिगाड़ सकता है और उन्होंने न तो बहुसंख्यकों की परवाह की और न देशहितों की परवाह की और वे अपनी मर्जी से ही उचित या अनुचित सभी काम करते रहे और कांग्रेस सरकार ने उनसे वोट लेने के लोभ में तुष्टीकरण की नीति अपनाये रखी जिससे हिन्दू, मुसलमानो में फर्क बढ़ता गया। मैं यह नहीं कहता कि इस पुरानी कांग्रेस से अलग होकर जो राष्ट्रवादी या देश हितकारी कांग्रेस बने वह इस कांग्रेस के सब सिद्धान्तों को छोड़ देवें। वह नई कांग्रेस अपने भारतीय संविधान के अनुसार ही चले लेकिन देश का हित चाहने वाला चाहे कोई भी धर्म सम्प्रदाय प्रांत व भाषा का हो वह भारतीय है उसको संविधान के सभी अधिकार प्राप्त होवे और जो देश के हितों के विरूद्ध काम करता है वह चाहे कोई भी दण्डनीय हैं। यह सिद्धांत अपनावे जो तिलक, पटेल, लाल बहादुर शास्त्री के थे। इस नई कांग्रेस को 360 की धारा हटाने से राम मन्दिर बनाने से कोई सरोकार नहीं। अब जो स्थिति है उसको बरकरार रखते हुए हिन्दू-मुसलमानों से समान व्यवहार रखते हुए उसे काम करना चाहिये। इधर बी.जे.पी. को आरएसएस व विश्व हिन्दू परिषद् का साथ रखते हुए हिन्दुओं के अधिकारों का हनन न हो। इसका पूरा ध्यान रखते हुए राष्ट्रीय मुसलमानों को साथ लेकर दोनों से समान व्यवहार रखते हुए देश की उन्नति, समृद्धि व विकास का काम करते रहना चाहिए। दोनो ही पार्टियों बीजेपी और कांग्रेस देश के हितों का ध्यान रखे और किसी नागरिक से पक्षपात का रवैया नहीं अपनाये तो दिलों में न तो कोई विशेष अन्तर रहेगा और न परस्पर विरोध रहेगा। दोनों ही राष्ट्र के हित का ध्यान रखते हुए काम करेगी। इन दोनों के राष्ट्रीय विचार होने से अंराष्ट्रीय तत्वों की विध्वंसक हरकते नहीं चलेगी और वे राष्ट्र की उन्नति विकास व समृद्धि में कोई बाधा नहीं डाल सकेगें। जैसे मैंने ऊपर लिखा है कि सभी राजनैतिक पार्टियों में राष्ट्रवादी व अराष्ट्रवादी दोनों किस्म के सदस्य है यानी सपा, बसपा, राजद व बाम मोर्चा इन सभी में अच्छे राष्ट्रवादी व्यक्ति भी है। वे पद का लोभ छोड़कर उन पार्टियों से निकल कर किसी भी नाम से एक अलग पार्टी बनाकर कोई भी अच्छी पार्टी जो शासन में आये उसको बाहर से समर्थन करे या उसमें मिलकर कार्य करे तो देश का भाग्य उदय हो जायेगा और देश गुलाम होने से बच जायेगा। जितनी भी धार्मिक सम्प्रदायक व संगठन है वे सिर्फ अखण्ड कीर्त्तन रात्रि जागरण, भागवत कथाऐं, श्रृंगार लीलायें आदि करके ही सतुष्ट न रहें। अपने कार्यक्रमों में राष्ट्रीय कार्यक्रम भी शामिल करे। जैसे राष्ट्र रक्षा, राष्ट्र एकता, गोरक्षा, नारी उत्थान, शुद्धि समर्थन, वैदिक शिक्षा प्रसारण, जाति-पाति, ऊँच-नीच, भेद उन्नमूलन आदि। अब सिर्फ अध्यात्मिक उपदेशों से ही काम नहीं चलेगा। अब बच्चें व नौजवानों में राष्ट्रीय भावना भरनी बहुत जरूरी है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने सबसे पहले इस बात पर ध्यान दिया और अपने अमर ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में एक छठा समुल्लास ही राज धर्म का लिखा और स्वतंत्र रहने के महत्व भी को दर्शाया। इतना ही नहीं आर्य समाज के द स नियमों में पहले पांच नियम तो ईश्वर वेद व सत्य सम्बन्धी धार्मिक बनाये बाकी पांच नियम समाज राष्ट्र व मानव-मात्र की भलाई व व्यवस्था बनाये रखने के लिये लिखे और अपने जीवन में वेद प्रचार के साथ-साथ गोरक्षा नारी शिक्षा, सामाजिक सुधार, शूद्रों के उद्धार व शुद्धि संस्कार के भी कार्य किये। महर्षि की भांति ही हर साधू, संत, सूफी व संन्यासियों को अध्यात्मिक प्रचार के साथ-साथ समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिये कार्य भी करना चाहिए। जिससे राष्ट्र में चेतना जागृत हो।

सभी राष्ट्रवादी धार्मिक, राजनैतिक, पार्टियों के सदस्यों को संगठित होने के साथ-साथ सभी हिन्दुओं का संगठित होना भी अति आवश्यक है। मेरी एक बहुत बड़ी शिकायत यह है कि आरएसएस, विश्व हिन्दू परिषद् व बजरंग दल वाले आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के नाम से बड़ा परहेंज रखते है। वे काम दयानन्द और आर्य समाज का ही करते है परंतु नाम लेना नहीं चाहते, यह उनके लिये उचित नहीं। आर्य समाज के नेताओं, संन्यासियों व अधिकारियों ने राष्ट्र के साथ-साथ हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये भी अपने प्राणों की बाजी लगाई और आगे भी सदा लगाते रहेगें। कारण उनके गुरू ने हर अच्छे कार्यो के लिये उन्हें जीवन सममित करने की शिक्षा दी है। मुझे खेद है आर्य समाजियों में भी आजकल आरएसएस, विश्व हिन्दु परिषद् यहां तक की बीजेपी के प्रति भी कुछ उपेक्षा व अश्रद्धा के भाव उत्पन्न होने लगे है। मैं मानता हूँ कि यह उनकी प्रतिक्रिया है फिर भी आर्य समाजियों को अपने आदर्श से जो उनके गुरू देव दयानन्द ने उनको सिखाया है, उससे विचलित नहीं होना चाहिए। यदि हम सहीं रहेगें तो वे भी हमारे साथ रहेंगे कारण हम दोनों का उद्देश्य ''राष्ट्र सेवा'' दोनों की माता ''भारतमाता'' दोनों का धर्म गन्थ ''वेद'' दोनों का पूज्यनीय पशु ''गोमाता'' दोनों का विश्वास ''पुनर्जन्म'' सब एक ही है और हमारे शिक्षा ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता व आदर्श पुरूष राम, कृष्ण, शंकराचार्य, बुद्ध महावीर, गुरू नानक व महर्षि दयानन्द सब एक ही हैं हमें देश व धर्म की रक्षा के लिये अलग-अलग समझने की कल्पना ही नहीं करनी चाहिये।

यदि हम सभी हितैषी नागरिक जिनमें सभी धर्म सम्प्रदाय व संस्थाओं के व्यक्ति आ जाते है। वे सभी सच्चाई, ईमानदारी व नि:स्वार्थ भाव से इन बातों को मानकर इन पर चले तो अराष्ट्रीय तत्वों से हम आसानी से मुकाबला कर सकेंगे और देश की स्वतंत्रता को सुरक्षित और अक्षुण्ण रख सकेंगे। इनके अलावा और कोई मार्ग मेरे समझ में नहीं आता।

पृष्ठ २ का शेष

मर गया तो उसको सिद्ध करने के लिए हमारे पास शायद कोई प्राकृतिक वस्तु न मिले।

अगर कोई घर है भी तो उसी ने बनाया था जब तक इसका दस्तावेज नहीं मिलता अथवा उसके बारे में कोई जनश्रुति नहीं मिलती तो कैसे सिद्ध किया जा सकता है? आज के समय में देश में अथवा विदेशों में राज्य करने वाले प्रधानमन्त्रियों तथा राष्ट्रपतियों के बारे में 1000 वर्षो के बाद में कोई प्रमाण माँगे तो उसे समय उनके पास सिर्फ पुस्तकीय विवरण तथा जनश्रुति ही उनके इतिहास को बता सकती है।

पिछले कुछ वर्षो में कम्प्यूटर का ज्ञान रखने वाले कुछ अति उत्साही लोगों ने वाल्मीकि रामायण (बालकाण्ड) में वर्णित श्री राम के जन्म समय (चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न आदि) की प्लेनेटेरियम गोल्ड साफ्टवेयर के माध्यम से आधुनिक गणना की है। इन लोगों ने ग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति का अध्यन करते हुए यह परिणाम निकाला कि श्री राम का जन्म 10 जनवरी, 5114 ई. पूर्व (अर्थात आज से 7121 वर्ष पूर्व) हुआ था।

ये लोग जहाँ साधुवाद के पात्र हैं, वहाँ हमें यह भी याद रखना चाहिए कि गणित ज्योतिष की अनभिज्ञता व साहित्यिक प्रमाण के अभाव के कारण उनका यह परिणाम ठीक नहीं। गणित ज्योतिष के हिसाब से लगभग 26000 वर्षो में राशियाँ अपना एक चक्र पूरा कर लेती हैं। अर्थात एक राशि चक्र का अपने पूर्ववत स्थान पर आने के लिए लगभग 26000 वर्ष लगते हैं।

इसीलिए राम सिर्फ 7121 वर्ष पूर्व ही जन्मे, यह किस आधार पर कहा जा सकता है? पहले दिए गए वायुपुराण व महाभारत के प्रमाणों के आधार पर यदि हम श्रीराम का जन्म 28 वें त्रेता (वर्तमान चतुर्युगी) में मानें तो तब से राशि चक्र आकाश में 33 चक्कर लगा चुका है व 34 वाँ चालू है और यदि हम 24 वें त्रेता का आधार लेते हैं तो तब से लेकर आज तक 698 राशि चक्र पूरे हो चुके हैं और 669 वाँ चक्र अभी चल रहा है। नासा अमेरिका एजेंसी के जैमिनी-11 आकाश यान (स्पेशक्राफ्ट) द्वारा वर्ष 2002 में एडम ब्रिज (रामसेतु) के लिए गए चित्रों के वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर कहा गया था कि भारत तथा श्रीलंका को जोड़ने वाले पुल के ये अवशेष मनुष्यकृत हैं तथा लगभग 17.5 लाख वर्ष पुराने हैं।

आर्य समाज, सफदरजंग एन्क्लेव दिल्ली एवम् आर्य समाज राजेन्द्र नगर दिल्ली

रविवार, 1 अप्रैल 2012, दक्षिण दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज सफदरजंग एन्क्लेव, का वार्षिकोत्सव धूम धाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य के साथ प्रधान श्री रविदेव गुप्ता, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री बलवीर वर्मा, सीता वर्मा व मंत्री श्री ओम प्रकाश जसूजा। द्वितीय चित्र में केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश की बैठक आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली में सम्बोधित करते आचार्य कैलाश चन्द्र जी, मंच पर बायें से प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती प्रभा सेठी, प्रभारी श्रीमती नीता खन्ना, डॉ. अनिल आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, माता सन्तोष वधवा, सुधा वर्मा, व कोषाध्यक्ष श्रीमती वेद प्रभा बरेजा। कुशल संचालन श्रीमती आदर्श सहगल ने किया।

फरीदाबाद जिला अध्यक्ष जितेन्द्र सिंह आर्य व आचार्य विद्या जी लोवांकलां का अभिनन्दन

शुक्रवार 23 मार्च 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में आर्य समाज सेवा सदन बल्लभगढ़ में आयोजित शहीद दिवस के अवसर पर जिला अध्यक्ष श्री जितेन्द्र सिंह आर्य को सम्मानित करते हुए डॉ. अनिल आर्य, साथ में श्री सत्य भूषण आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री देवेन्द्र यादव व श्री के.एस. यादव (CGM, Escorts, Fbd.)। द्वितीय चित्र में द्वारका में आयोजित श्री राम जन्मोत्सव में गुरूकुल लोवांकलां की आचार्या विद्या जी को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, आचार्य देव नारायण शास्त्री, रमेश योगाचार्य व जगवीर सिंह आर्य।

स्व. माता जानकी देवी नागपाल का स्मरण

आर्य समाज प्रशांत विहार, दिल्ली की संरक्षक माता जानकी देवी नागपाल का 78 वर्ष की आयु में गत् मंगलवार 10 अप्रैल 2012 को निधन हो गया। फाईल चित्र- आर्य समाज के गत वार्षिक उत्सव पर माता जानकी देवी नागपाल परिषद अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य को शाल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए। साथ में श्री ओम प्रकाश भावल

ग्रीष्मकालीन शिविरों का कार्यक्रम

1. दिल्ली आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक
स्थान: आर्य समाज मंदिर, पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-110060
सम्पर्क-प्रभा सेठी-9871601122, आदर्श सहगल-9266101941

2. एटा युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 21 मई से 27 मई 2012 तक
स्थान: प्राईमरी स्कूल, लंगुटिया, डाक. दातौली, जिला-एटा, उ.प्र.
सम्पर्क-श्री यज्ञवीर चौहान-09810493055

3. अलवर युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 27 मई से 3 जून 2012 तक
स्थान: डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड़, जिला-अलवर, राजस्थान
सम्पर्क-श्री रामकृष्ण शास्त्री-09461405709

4. पलवल युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक
स्थान: आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल, हरियाणा
सम्पर्क-प्रो. जयप्रकाश आर्य-09813491919

परिषद् की आगामी बैठकें

1. उत्तरी दिल्ली क्षेत्र:-
रविवार 22 अप्रैल 2012, प्रात: 11:30 बजे
स्थान: आर्य समाज, शालीमार बाग, बी जे पश्चिमी, दिल्ली-110088

2. पश्चिमी दिल्ली क्षेत्र:-
रविवार 22 अप्रैल 2012, सायं 5:00 बजे
स्थान: आर्य समाज, रमेश नगर, ब्लॉक-9, दिल्ली-110015

3. उत्तर प्रदेश प्रांतीय बैठक:-
रविवार 29 अप्रैल 2012, दोपहर 3:00 बजे
स्थान: आर्य समाज गांधी नगर, निकट चौधरी मोड़, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
कृप्या सभी आर्य युवक/आर्यजन अपने निकट की बैठक में समय पर पहुंचे।

श्री आनन्द प्रकाश आर्य पुन: प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज हापुड़ के चुनाव में श्री आनन्द प्रकाश आर्य-प्रधान, श्री विकास अग्रवाल-मंत्री, श्री अनिल आर्य (कसेरा)-कोषाध्यक्ष एवं आर्य महिला समाज के चुनाव में श्रीमती माया आर्या-प्रधाना, श्रीमती सुनीता गुप्ता-मंत्री व श्रीमती पुष्पा आर्या-कोषाध्यक्षा निर्वाचित हुई।

आर्य समाज हापुड़ का 122 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हापुड़ का 122 वां वार्षिकोत्सव दिनांक 3 मई से 6 मई 2012 तक मनाया जा रहा है। शोभायात्रा 3 मई को सायं 4 बजे निकलेगी। सभी आर्यजन सपरिवार दर्शन दें। **-विकास अग्रवाल मंत्री**

श्री अमरनाथ गोगिया प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज मॉडल बस्ती, दिल्ली के चुनाव में श्री अमरनाथ गोगिया-प्रधान, श्री आदर्श कुमार आहुजा-मंत्री, श्री सुनील सूरी-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक एमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा में आयोजित किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र- **मृदुला चौहान**-9810702760, **डॉ. उत्तमा यति**-8750482498

गाजियाबाद जनपदीय आर्य महा सम्मेलन

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में शुक्रवार 27 अप्रैल से रविवार 29 अप्रैल 2012 तक विजय धर्मशाला, विजय मण्डी, मुरादनगर, गाजियाबाद में आयोजित किया जा रहा है। **-माया प्रकाश त्यागी, प्रधान-०९८७३५४०५०८**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970